Department of Philosophy
D. B. COLLEGE, JAYNAGAR, MADHUBANI (BIHAR)
(A Constituent unit of L. N. Mithila University K. Nagar, Darbhanga)
Paper II Westren Philosophy (BA Part I H.)

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619
Lecture No. 14, Sept.
September 12, 2020

BA Part I H.

लाइबनित्ज़ द्वारा दिया गया ईश्वर संबंधी प्रमाण

लाइबनित्ज़ के दर्शन में प्रतिपादित ईश्वर की अवधारणा ईसाई धर्मशास्त्र की संकीर्ण सीमाओं तक ही सीमित नहीं है। भले ही वह प्रोटेस्टेंट ईसाई था, तथापि उसमें किसी प्रकार की धार्मिक कट्टरता न थी। कहा जाता है कि रूढ़िवादी ईसाइयों को उसके धार्मिक होने के बारे में भी संदेह होने लगा था, क्योंकि वह चर्च में नहीं जाता था। अतः लाइबनित्ज़ का ईश्वर संबंधी विचार अत्यंत विवाद का विषय रहा है। वह स्वरूपतः ईश्वर को एक परम् चिदणु मानता है, किंतु इसके साथ-साथ ईश्वर गवाक्षहीन चिदणुओं की सामंजस्यपूर्ण व्यवस्था का सूत्रधार भी है। उनके अनुसार ईश्वर की तुलना में अन्य सभी चिदणुओं को अपूर्ण, अपेक्षाकृत कम क्रियाशील एवं कम शक्तिशाली हैं होते हैं। ईश्वर पूर्ण रूप से **'सक्रिय चिदणु' (Actus Porus)** है। वह विकास के सर्वोच्च शिखर पर है। ईश्वर के अतिरिक्त अन्य चिदणु कुछ ना कुछ निष्क्रिय और सूक्ष्म जड़ता से ग्रस्त है। किंतु ईश्वर अशरीरी, पूर्ण रूप से गतिशील और सूक्ष्म जड़ता से पूर्णतया मुक्त चिदणु है। अतः लाइबनित्ज़ का ईश्वर चिदणु होते हुए भी अन्य चिदणुओं से भिन्न है।

लाइबनित्ज़ के दर्शन में ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए दी गई युक्तियों को दो भागों में बांटा जा सकता है :-

प्रथम **प्रगानुभविक (Apriori) युक्ति** एवं द्वितीय **अनुभविक (Aposteriori) युक्ति।**

प्रागानुभविक युक्ति के अंतर्गत मुख्य रूप से सत्ता मुलक् तर्क आता है। यद्यपि लाइबनित्ज़ नित्य सत्यों पर आश्रित युक्ति एवं पूर्व स्थापित सामंजस्य-नियम पर आधारित युक्ति का भी उल्लेख किया है, तथापि इन तर्कों का अंतर्भाव किसी न किसी रूप में सत्ता मुलक् तर्क और सृष्टि वैज्ञानिक तर्क के अंतर्गत ही हो जाता है।

सत्तामुलक् तर्क :-

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619

इस तर्क के अनुसार ईश्वर सबसे अधिक पूर्ण सत्ता है, क्योंकि सर्वाधिक पूर्ण तत्व का संप्रत्यय संभव है। उसे स्वीकार करने में कोई कठिनाई नहीं है। सबसे पूर्ण सत् के रूप में ईश्वर को मानना आवश्यक है, क्योंकि वह अन्य व्यक्तियों का परम लक्ष्य है। चूंकि ईश्वर अनेक पूर्णताओं का आदर्श है, इसीलिए उसकी सत्ता तर्कतः सिद्ध होती है। ईश्वर ही समस्त पूर्णताओं का आधार है, इस दृष्टि से लाइबनित्ज़ ने उसकी (ईश्वर की) सत्ता को सिद्ध करने का प्रयास किया है।

उल्लेखनीय है कि लाइबनित्ज़ ने डेकार्ट के द्वारा दिए गए सत्ता मुलक् तर्क को अपूर्ण माना है। उनके अनुसार डेकार्ट के द्वारा दी गई युक्ति से यह सिद्ध नहीं होता है कि ईश्वर का प्रत्यय संभव है, तो ईश्वर का अस्तित्व है। लाइबनित्ज़ कहते हैं कि डेकार्ट ने यह नहीं दिखाया है कि सत्ता का प्रत्यय और सर्वाधिक पूर्ण तत्व का प्रत्यय सामंजस्यपूर्ण है। उनके इन दोनों प्रत्यय का संयोजन व्याघाती हो सकता है। इसे एक युक्ति के रूप में प्रस्तुत करना सुविधाजनक होगा --

सभी संभव वस्तुओं का अस्तित्व है। (मुख्य आधार वाक्य)
ईश्वर संभव है। (अमुख्य आधार वाक्य)
अतः ईश्वर का अस्तित्व है। (निष्कर्ष)

लाइबनित्ज़ के अनुसार, चूंकि सत्ता का प्रत्यय और सर्वाधिक पूर्ण तत्व के प्रत्यय का संयोजन व्याघाती हो सकता है, क्योंकि डेकार्ट ने दोनों के सामंजस्यपूर्ण होने की व्याख्या नहीं की; इसलिए पूर्वोक्त आधार वाक्यों को स्वीकार करने पर भी डेकार्ट की मान्यताओं के आधार पर निष्कर्ष कि ईश्वर का अस्तित्व है को निगमित नहीं किया जा सकता। अतः डेकार्ट का साक्ष्य अपूर्ण है।

समीक्षा :-

सत्तामुलक् युक्ति में लाइबनित्ज़ के अनुसार केवल ईश्वर के संदर्भ में ही विधेय पद उद्देश्य पद के अंतर्गत में निहित तो हो सकता है। किंतु अन्य संदर्भ में ऐसा संभव नहीं है। परंतु रसेल के अनुसार यह युक्ति 'ईश्वर है' इस वाक्य को विश्लेषणात्मक

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619

मान लेती है। अन्य चिदणुओं के संबंध में लाइबनित्ज़ ने अस्तित्व को विधेय नहीं माना है। इस प्रकार लाइबनित्ज़ दो परस्पर विरोधी बातें स्वीकार कर लेता है।

यदि यह कहा जाए ईश्वर का अस्तित्व ईश्वर की परिभाषा से फलित होता है तो यह मान्यता तर्क वाक्यों के अस्तित्ववादी दृष्टिकोण (सत्तात्मक पूर्वमान्यता) को स्वीकार कर लेती है।

यदि सभी तर्कवाक्य किसी न किसी अस्तित्व युक्त वस्तु की ओर संकेत करते हैं, तो संभाव्यता और वास्तविकता में अंतर नहीं किया जा सकेगा। इस प्रकार लाइबनित्ज़ के लिए आपातिकता और अनिवार्यता में अंतर करना कठिन होगा।

सृष्टि वैज्ञानिक युक्ति :-

समस्त आनुभविक तर्कों को सृष्टि वैज्ञानिक तर्क के अंतर्गत सम्मिलित किया जा सकता है। वस्तुतः सृष्टि वैज्ञानिक युक्ति आनुभविक साक्ष्य के अंतर्गत आती है। लाइबनित्ज़ के अनुसार विश्व में प्रत्येक वस्तु आकस्मिक है। यदि यह कहा जाए कि विश्व सदैव से अस्तित्व युक्त रहा है तो भी इससे यह नहीं सिद्ध किया जा सकता है कि विश्व की सत्ता क्यों है? लाइबनित्ज़ का दावा है कि केवल उसी वस्तु को सत्य माना जा सकता है, जिसका कोई पर्याप्त कारण (Sufficient Reason) हो। इसी प्रकार इस सृष्टि का भी कोई ना कोई 'पर्याप्त कारण' अवश्य होगा। लाइबनित्ज़ के अनुसार सृष्टि का यह पर्याप्त कारण ईश्वर ही हो सकता है। यद्यपि ईश्वर का अस्तित्व है, तथापि वह इस सृष्टि की रचना करने के लिए बाध्य नहीं हो सकता। यह जगत ईश्वर के शुभ संकल्प पर आधारित है।

लाइबनित्ज़ के अनुसार द्वारा दी गई यह युक्ति प्रथम कारण की मान्यता से भिन्न है। प्रथम कारण की मान्यता पर आधारित युक्ति के अनुसार कारण कार्य की श्रृंखला में

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619

आदि कारणों पर विशेष बल दिया जाता है। लाइबनित्ज़ के द्वारा दिया गया तर्क प्रथम कारण के स्थान पर पर्याप्त कारण की मान्यता पर आधारित है।

इस संदर्भ में लाइबनित्ज़ ने सत्यों पर आधारित एक तर्क दिया है। उनके अनुसार कुछ कथन आपातिक रूप से सत्य होते हैं, (जैसे गुलाब लाल है) और कुछ कथन शाश्वत रूप से सत्य होते हैं (जैसे त्रिभुज त्रिकोणात्मक होता है)। आपातिक सत्य का आधार भी नित्य सत्य को खोजना चाहिए। लाइबनित्ज़ के अनुसार यदि नित्य द्रव्य ना हो तो नित्य सत्य भी नहीं होगा। ईश्वर ही नित्य सत्य का आधार हो सकता है। वस्तुतः नित्य सत्यों पर आधारित तर्क भी सृष्टि वैज्ञानिक तर्क के समान है। ईश्वरीय बुद्धि नित्य सत्यों की आश्रय अथवा पर्याप्त कारण हो सकती है। वस्तुतः यह सृष्टि वैज्ञानिक तर्क का ही दूसरा रूप है।

समीक्षा :-

यदि पर्याप्त कारण की मान्यता को अस्वीकार कर दिया जाए तो यह तर्क स्वता खंडित हो जाता है। यदि प्रत्येक वस्तु का पर्याप्त कारण माना जाए तो प्रश्न उठता है कि ईश्वर का पर्याप्त कारण क्या है? यदि यह कहा जाए कि ईश्वर का कोई भी पर्याप्त कारण नहीं हो सकता, तो पर्याप्त कारण पर आधारित युक्ति का स्वतः निराकरण हो जाता है। रसल के अनुसार स्वयं लाइबनित्ज़ भी ईश्वर और नित्य सत्यों में भेद करता है। यदि दोनों को एक न माना जाए तो ईश्वर की सत्ता के अभाव में भी नित्य सत्य संभव हो सकता है। अतः अनुभवमूलक तर्क पर आधारित सृष्टि वैज्ञानिक तर्क भी ईश्वर की सत्ता को निर्दोष रूप से प्रमाणित नहीं करता।

इन तर्कों के अतिरिक्त ने पूर्वस्थापित सामंजस्य-नियम के आधार पर भी ईश्वर को सिद्ध करने का प्रयास किया है। ईश्वर ही चिदणुओं में सामंजस्य के नियम का व्यवस्थापक है। यह युक्ति जगत की व्यवस्थाओं को प्रयोजन पर आश्रित मानती है। परंतु रसल की अनुसार यह युक्ति चिदणुओं की पूर्णता और स्वतंत्रता का अपहरण कर लेती है। यदि ईश्वर ही समस्त चिदणु-व्यवस्था का सृष्टा और व्यवस्थापक है तो

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619

चिदणुओं को स्वतंत्र नहीं कहा जा सकता। अतः चिदनुवाद और ईश्वरवाद लाइबनित्ज़ के दर्शन में संगतिपूर्ण नहीं है।

ईश्वरत्व को प्राप्त करने की प्रेरणा से विकासशील चिदणुओं को तर्कतः ना तो गवक्षाहीन (Windowless) कहा जा सकता है और न हीं पूर्ण कहा जा सकता है। अतः ईश्वरवाद के साथ साथ चिदनुवाद को स्वीकार करना तर्कसंगत प्रतीत नहीं होता। चिदनुवाद या तो सर्वेश्वरवाद में परिणत हो जाता है या फिर अंतर्विरोध से ग्रस्त हो जाता है।

ऐसा लगता है कि लाइबनित्ज़ अपने दर्शन में ईसाई धर्म की मान्यताओं को समाविष्ट करना चाहता है। वह स्पिनोज़ा के समान सर्वेश्वरवादी नहीं हो सकता क्योंकि ऐसी मान्यता ईसाई धर्म शास्त्र के विरुद्ध है। अतः उसका ईश्वर सृष्टि से अभिन्न नहीं, बल्कि सृष्टिकर्ता और सृष्टि का व्यवस्थापक है। लाइबनित्ज़ का ईश्वर स्वतंत्र होते हुए भी निरंकुश नहीं है। उसके कार्य तार्किक नियमों के अनुसार संचालित होते रहते हैं।